अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय–द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

साहित्य का अवलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रकिया का एक महत्वपूर्ण चरण है, चाहे वह किसी भी क्षेत्र का हो । शोध कार्य के अन्तर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रकिया है, क्योंकि वह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है।

पूर्व में हुये शोधकार्य – प्रस्तुत अध्याय में वर्तमान में शोधकार्य से संबंधित पूर्व में हुए शोधकार्यो एवं साहित्य का पुनरावलोकन किया गया है। प्राथमिक कक्षाओं से संबंधित हिन्दी भाषा की तत्सम, तद्भव शब्दों की उपलब्धियों पर विशेष शोध कार्य के आभाव में उनसे संबंधित साहित्य का संक्षिप्त वर्णन निम्न लिखित हैं–

- आनंद वी.एस. (1990) प्राथमिक कक्षाओं का पाठन शब्द भंडार

उद्देश्य– हिन्दी वाचकों के द्वारा शब्द भंडारों को बोलते समय शिक्षक रूप में ध्वनि का उपयोग करते है या नहीं। विभिन्न स्तरों पर वाचकों द्वारा शब्द भण्डारों के प्रयोग का तुलनात्मक मूल्याकंन करना।यदि कोई नियम या सिद्धांत हो जो कि शब्द भंडारों के चयन व प्रस्तुतिकरण में सहायक हो तो उसकी पहचान करना। प्राथमिक स्तर के वाचकों के शाब्दिक भंडारों के चयन व प्रस्तुतिकरण के लिये। एक सुविकसित, सुव्यवस्थित दिशा निर्देश निर्धारित करना।

निष्कर्ष – अलग–अलग कक्षाओं के वाचकों द्वारा शब्द भंडारों के आकारों के प्रयोग में व्यापक स्तर पर भिन्नता पाई गयी। हिमाचल प्रदेश की कक्षा एक की पुस्तक में 364 शब्द भंडार हैं जबकि दिल्ली में उसी कक्षा की पुस्तक में 905 अलग शब्द है। हिमाचल प्रदेश के वाचकों द्वारा कक्षा 1 से 5 के बीच में कुल 34,500 अलग–अलग प्रकार के शब्द पाये गये जबकि उसी के समान बिहार में 65,265 शब्दों का प्रयोग होता है। प्रति छात्र पांच वर्ष में औसत 54,170 शब्दों को पढ़ लेता है।

- Birkad, K.R. (1989) The relationship of literary creativity and linguistic ability with proficiency in the marathi language.

उद्देश्य– मराठी और भाषायी सृजनात्मकता व भाषायी क्षमता के बीच संबंधों का परीक्षण करना।

निष्कर्ष–लड़कियों की तुलना में लड़कों में भाषायी क्षमता और साक्षरता (शाब्दिक) सृजनात्मकता अधिक है। वाक्यों की रचना प्रकार, भावत्मक तीव्रता संवाद लेखन, कहानी लेखन तथा कहानी पूर्ण करना यहॉ तक की कविता रचना तथा कल्पनापूर्ण क्षमता में लड़को व लड़कियों में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

- Jayaram, B.D.(1990) Language teaching situation in Hindi speaking states : A survey report on the states of Haryana and Rajasthan.

उद्देश्य– त्रिभाषायी सूत्र के प्रयोग के बाद भाषायी शिक्षण स्थिति में हिन्दी बोलने वाले राज्यों में नई जानकारी को पता करना।

निष्कर्ष– आधुनिक भारतीय भाषाओं का शिक्षण हिन्दी बोलने वाले राज्यों (क्षेत्रों) के विद्यालयों में यह बात पूरी तरह सही नहीं पाई गयी कि वहॉ अन्य दो भाषाओं के अतिरिक्त एक अन्य दक्षिणी भाषा पढ़ाई जाय। इन राज्यों में जो त्रिभाषायी सूत्र अपनाया जाता है उसमें सर्वप्रथम हिन्दी भाषा दूसरी भाषा अंग्रेंजी तथा तीसरी भाषा के रूप में संस्कृत को अपनाया गया है। जिससे MILS ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

- Mohanty, S. (1989) The effects of age, sex and individual differences in language development of oriya speaking children.

उद्देश्य– पर्यावणीय विकास का भाषायी विकास एवं भाषायी ज्ञान प्राप्त करने की लालसा में साहित्यिक शैली संबंधी अंतर पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करना।

निष्कर्ष– अलग–अलग प्रकार के भाषायी मापनों में आयु व लिगांनुसार कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। सिर्फ चित्रीय शाब्दिक परीक्षण में आयु का सार्थक प्रभाव देखने को मिला। लिंग अन्तर से कोई भी सार्थक प्रभाव प्रदर्शित नहीं हुआ।

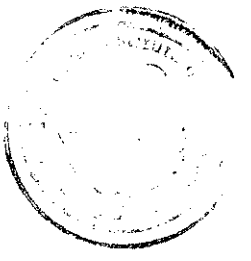

- Naseem, H.C. (1978) An investigation into the basic vocabulary of chidren of class V (10+) in the state of Haryana.

उद्देश्य– दस वर्ष तक के विद्यार्थियों की समझ में आने वाले शब्दों की सूची तैयार करना। पाठ्यपुस्तकों के लेखकों को बच्चों के स्तर (उच्च, औसत, निम्न) को ध्यान में रखते हुए श्रेणीबद्ध पुस्तके तैयार करने के लिए सक्षम करना। भाषायी ज्ञान में पिछड़े हुए विद्यार्थियों के लिए शिक्षकों को उपचारात्मक परीक्षण तैयार करने के लिए समक्ष करना।

निष्कर्ष– कक्षा पांच में प्रयुक्त होने वाले शब्दों में कई ऐसे थे जिनका कठिनाई स्तर शून्य था और कई ऐसे जिनका 99 प्रतिशत। 20 प्रतिशत से कम कठिनाई स्तर वाले 202 शब्द पाए गए। 298 शब्द ऐसे थे जिनका कठिनाई स्तर 70: से कम था। 20 प्रतिशत से 69 प्रतिशत तक के कठिनाई स्तर वाले 1525 शब्द पाए गए। 1525 ऐसे शब्दों को खोजा और शिक्षकों को बताया गया जो कि 10 वर्ष तक के विद्यार्थियों को पता होने चाहिए।

- Sharma, N.(1978) Investigation into the basic assamese vocabulary.

उद्देश्य– असमी भाषा के बुनियादी शब्दों के समझने वाले विद्यार्थियों के कुल प्रतिशत को ज्ञात करना। कक्षा 6 के विद्यार्थियों के संदर्भ में कठिन शब्दों की एक सूची तैयार करना। पाठ्यपुस्तक लेखकों को वैज्ञानिक आधार पर अन्य पाठ्यसामग्री का निर्माण करने के लिए प्रेरित करना। श्रेणीबद्ध पुस्तकों का निर्माण करवाना। शिक्षकों, उद्घोषकों आदि को बातचीत प्रश्नोत्तरी या वर्णन के दौरान ऐसे शब्दों का उपयोग करने के लिए प्रेरित करना जिसे विद्यार्थी अच्छे से समझ सकें ।

निष्कर्ष – असमी भाषा के बुनियादी शब्द भण्डार में कक्षा 6 के संदर्भ में 1986 शब्द है जिन्हें समूह में विभक्त करने पर 1589 शब्द बनते हैं। 1986 में से सिर्फ 204 शब्द ऐसे हैं जिन्हें कक्षा 6 के विद्यार्थी जानते व समझते हैं । संभावित शब्दभंडार और वास्तविक शब्द भंडार में 1395 शब्दों का अंतर पाया गया।

——00——